>

Title: Regarding leakage of sensitive information posing threat to the internal and external security of the country.

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे अत्यन्त लोक महत्व के विषय पर बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं।

महोदय, हाउस में हमेशा इस बात की चिन्ता रहती है कि देश की बाहरी और आन्तरिक सुरक्षा को उत्पन्न खतरों से कैसे बचाया जाए। मैं अपने देश की खुफिया एजेंसी को बधाई देना चाहता हूं कि उसने कल-परसों, एक आई.एफ.एस. अधिकारी, इस्लामाबाद के दूतावास में जासूसी के मामले में गिरफ्तार किया है। उससे बहुत बड़ी उपलब्धि हमारे देश को हुई है। अगर देखा जाए, तो इसी खुफिया एजेंसी और सूचना की चूक के कारण अपने देश के लिए जो आन्तरिक और बाहरी खतरे हुए हैं, उन से सैकड़ों और हजारों आदमियों की जानें गई हैं। इस बात से हम पीछे नहीं हट सकते हैं, लेकिन जहां तक देखा जाए, सुरक्षा की चूक, चाहे आन्तरिक खतरे हों या बाहरी, हमेशा हुई है। पूर्व में सूचना भी रही है कि यहां पर यह घटना घटने वाली है, फिर भी हम से चूक हुई है। इस्लामाबाद की जो घटना हुई है, उसमें एक आई.एफ.एस. अधिकारी गिरफ्तार की गई हैं। इस प्रकार की तमाम घटनाएं हुई हैं, जिनमें हमारी खुफिया एजेंसी ने बहुत अच्छा काम किया है। इसके लिए हमें और कोशिश करनी चाहिए ताकि हमें और अधिक सफलता मिल सके।

महोदय, चूंकि आनंद शर्मा जी, हमारे विदेश मंत्री भी रहे हैं और इस समय भी यहां उपस्थित हैं और देख रहे हैं, तो मेरे ख्याल से पूरे विश्व में, जहां-जहां भी, जिन-जिन देशों में भारतीय दूतावास हैं, वहां की खुफिया एजेंसी, इतनी चुस्त और दुरुस्त होनी चाहिए, ताकि जो हमारे बाहरी खतरे हैं, जो बहुत सारी खुफिया जानकारी देने का काम अन्य देशों को करते हैं, उन पर हमारी निगरानी रहनी चाहिए और प्रति माह इसकी हमें समीक्षा करना चाहिए, ताकि बाहरी और देश के अंदर होने वाले जो खतरे हैं, उनसे निजात मिले और जो बेगुनाह लोग मारे जाते हैं, वे न मारे जाएं। इस पर हमें कंट्रोल करना चाहिए और इसकी समीक्षा करते हुए हमें उन जानों को जाने से रोकना चाहिए। इस प्रकार की जो भी एजेंसियां देश के अंदर और बाहर हैं, उनकी समय-समय पर समीक्षा करते हुए, इन जानों को जाने से हम बचा सकते हैं। आपने मुझे इस विषय पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं पुनः आपको धन्यवाद देता हूं।